अध्याय : 7

स मा प न

अध्याय : 7

स मा प न

वीरेन्द्रकुमार जैन हिन्दी साहित्य के प्रयोगवादी कवि के रूप में पहचाने जाते हैं। वे एक सफल रोमांटिक कवि हैं, उतने ही वे एक संवेदनशील कवि के रूप में प्रयोगवादी कविता में अवतीर्ण हुए हुए हैं। उनकी कविताओं में प्रेम को लेकर फैण्टसीं की रचना दिखाई देती है। उनके संग्रह में प्रकृति का हृय वर्णन सजीव बन पड़ा है।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मुख्य रूप से प्रयोगवाद के कवि वीरेन्द्रकुमार जैन और उनके काव्य की विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों को लक्ष्य बनाकर अपनी बात कहीं गई है। सुविधानुसार यह समस्त अध्ययन सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रारम्भ में वीरेन्द्रकुमार जैन का जीवनवृत्त तथा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झाँकी मिलेगी। वीरेन्द्रकुमार प्रयोगवादी कवि हैं। प्रयोगवादी कविता में उनका योगदान अतुलनीय रहा है। साहित्य एक अनुभूति है। जीवन का दूसरा नाम गति है। यह गति समाज का संचलन करती है जब समाज गतिशील होता है, तब उसके पूर्व साहित्य की गति तीव्र होती है। सफल क्रान्ति पहले साहित्य की विचारधारा में होती है। समाज का रूपाकार तो बाद में बदलता है। कवि समाज में डूबकर जीवन की ओर देखता है। वह जीवन की पूर्णता में अपने आपको मिलाकर उसके साथ रागात्मक संबंध स्थापित करता है। जीवन एक निरपेक्ष साहित्य है।

वीरेन्द्रकुमार जैन की कविता जनसामान्य के तथा अपने दुःख-दर्द और पीड़ा की छटपटाहट की कविता है। वीरेन्द्रजी की कविता लोकजीवन की त्रासदी की सफल अभिव्यक्ति है। उनकी कविता में सरसता, कोमलता एवं संगीतात्मकता का

सहज प्राधान्य है। इसका परिचय मैंने इसमें चित्रित किया है।

वीरेन्द्रकुमार का जीवनकाल सामान्य रहा है। लेकिन उनका व्यक्तित्व सच्चे सोने के मुताबिक विकसित होता गया है। उन्हें अपने जीवन में यातना, पीड़ा दुःख आदि का सामना करना पड़ा मगर उन्होंने यातना, पीड़ा और दुःख को जीवन की संगिनी करहके जीया। उनकी कविताओं में आस्था एवं टूटन की विचारधारा मिलती है। उनकी कविता के अलावा कुछ उपन्यास, अनुवाद, कहानियों का योगदान रहा है।

उनकी कविता सामान्य मानव की यातना की कविता है तो दूसरी तरफ आधुनिकता को लेकर उभरी है। "अनागता की आँखें" से लेकर "शून्य पुरुष और वस्तुएँ" तक उनकी कविता का विकास पाया जाता है। उन सब कविताओं का सामन्य परिचय इसमें मैंने संकलित किया है।

उसके बाद कवि वीरेन्द्र ने अपने संवेनशील कल्पनाजीवी कवि का परिचय दिया है। उनकी कल्पना की कोई सीमा नहीं है। वे सौन्दर्य के प्रति अपनी अन्तरिक चेतना से सदा आक्रान्त रहे हैं। उनकी कल्पना परिकल्पनाओं की तरह साहित्य में उड़ान भरती है। उन्होंने प्रकृति को नारी-रूप में कल्पित करते हुए उसका वासनामयी चित्रण किया है। इनकी प्रणय संबंधी रचनाओं में एक स्थल ऐसा भी है जो इनके सम्बन्ध में बँधी हुई धारणाओं को बदल कर इनके काव्य को एक संगति प्रदान करता है। कवि बचपन से ही कल्पना के उत्तांग सागर में घूमता फिरता है। उन्होंने बचपन में ही बिना देखे एक प्राण सखी की कल्पना की थी।

कवि वीरेन्द्रकुमार ने अपनी कल्पनाओं को प्रस्तुत करते व्यक्त अपनी संवेदना की ओर भी प्रकाश डाला है, क्योंकि वे सौनदर्य के प्रति बड़े संवेदनशील दिखाई देते हैं। उनके संवेदनशील शब्दों ने उनके जीवन के स्वप्न प्रिया को प्रत्यक्ष साकार कर दिया है। उन्होंने अनेक परिवेशगत जटिलताओं, संघर्षों और यातनाओं के बीच ऐसा लगता है कि एक स्वप्न को उन्होंने जिया है। एक अद्‌भूत सहवेदनता और सुसंवादिता को जीवन के क्षण-क्षण में अनुभूत किया है। उनकी विग्ध और गहन

संवेदना की अभिव्यक्ति ने उन्हें चारों ओर से आवरित कर दिया है। मुझे ऐसा लगता है कि उनकी कविता में आत्मानुभूति ही विश्वानुभूति हो गयी है। उनकी वैयक्तिक संवेदना में लिखी लम्बी कविताओं में अनायास एक ओर युग की समस्याओं, संघर्षों, पीड़नों तथा दूसरी ओर सार्वकालिक मानवआत्मा की अस्तित्वगत मौलिक वेदनाओं और अन्तर्द्वन्द्वी का चित्रण हुआ है। उनकी अपनी संवेदना सारे मानव जाति की अपनी संवेदना है। उनके "शून्य पुरुष और वस्तुएँ" काव्यसंग्रह की कविता में कवि की नयी दृष्टि की खोज दिखाई देती है। यह कविताएँ सौन्दर्य-संवेदनात्मक साक्षात्कार की कविताएँ हैं। कवि ने त्रिआयामी सत्ता को अपनी अन्तर्मत और गहिरतम वेदना की आँच में गला कर, उसे से परे अनन्त आयामी सत्ता के दर्शन की कविताएँ लिखी हैं।

जीवन के अनेक नवीन क्षेत्र के परिधि के भीतर खींचकर वीरेन्द्र ने सफलता पायी है। अपरिचित बाह्य एवं आंतरिक जीवन की अभिव्यक्ति को उन्होंने उभारा है। उनकी कविताओं में यातना, पीड़ा के साथ-साथ प्रेम की स्थिति का वर्णन भी दृष्टव्य होता है। उनकी कविताओं में प्रेम की चार स्थितियाँ पायी जाती है वह स्थितियाँ एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। पहली है जीवन में व्यक्ति विशेष के प्रति आकर्षण। उसमें विफल होने पर मन की मर्यादा भंग हो जाती है और कवि के मन में काम उमड़ता है। तीसरी स्थिति में वह सौन्दर्य का व्यापक धरातल पर उपभोग करता है और अंत में कवि वीरेन्द्र इस परिणाम पर पहुँचता है कि सृष्टि में केवल वासना की प्रधानता है। फिर भी कवि वैयक्तिक एवं सामूहिक स्तरों पर निराश और कुण्ठित हैं। व्यक्ति समाज का प्रमुख घटक होता है वह समाज को गति और जीवन देता है, उसका समर्थन मैंने रेखांकित किया है। मानव विषयक आकलन इसमें पाया गया है।

वीरेन्द्रकुमारजी ने अपनी पीड़ा के विविध भाव-प्रणव का सुलभ चित्रण किया है। वासना के विविध पक्षों का ही सही चित्रण किया गया है। मानवीय मूल्यों का भाव इनकी कविताओं में मिलता है। उनका नया रूप, नयी कविता अपनी एक अलग ही पहचान करवा देती है। मानव समाज के यथार्थ चित्रण करने में कवि ने भूल नहीं की है। नागरीकरण तथा आधुनिक सभ्यता के भाव प्रणव

का चित्रण की भरमार इनकी कविता में पायी जाती है।

उसके बाद रोमांटिक कवि के रूप में वीरेन्द्रकुमार का व्यक्तित्व उभर कर आया है। अपनी रोमांटिकता के कारण उन्होंने सृष्टि के अनेक वस्तुओं का रोमांटिक चित्रण किया है, जैसे प्रकृति की नारी-रूप में कल्पना कर उसमें वासनामय चित्रण किया है। उन्होंने अपने कविता में प्रणय-प्रसंगों में वासना, दर्शन और मनोविज्ञान का मेल किया है। यह समन्वय हिन्दी के किसी कवि की कविता में नहीं पाया जाता यह न तो सूर जैसे उज्जवल रस के उपासक की भावना है, न कबीर जैसे रहस्यवादी की आत्मा की चिरंतन पुकार न पंत के कामना का उदात्तीकरण। यह तो जीवन में वासना के अनिवार्यता की निश्चय स्वीकृति है। श्री वीरेन्द्रकुमार जैन की भावना कीटस् की सौन्दर्य भावना, शैली की बेचैनी और विद्यापति के रीतिभाव का सम्मिश्रण-सा लगती है। फिर भी कुछ है, जो इस सबके बाहर रह जाता है। अतः इन भक्तों, निर्गुणोपासकों और छायावादियों के समान अनुराग के क्षेत्र में एक नयी धारा का वीरेन्द्रजी को प्रवर्तक समझना चाहिए।

कवि वीरेन्द्रजी ने प्रकृति को विविध रूपों में देखा है। विविध प्रकार से उसके सौन्दर्य की सराहना की है। प्रकृति के नाना गतिविधियों के चित्र अंकित किए हैं। नवीन प्राकृतिक दृश्यों की निर्मिती की है। और विविध प्रकार से प्रकृति के प्रति अपना अनुराग व्यक्त किया है। वह नागरी प्रकृति के चितारे कवि हैं। उन्होंने बम्बई की प्रकृति का हृदय खोलकर वर्णन किया है, जिसमें बार-बार समुद्र, जुहू, तट, नारियल एवं ताड़ के वनों तथा केलों के झुरमुटों का उल्लेख मिलता है। बम्बई की एक प्रकृति है जिसका विशेष सम्बन्ध उच्च वर्ग से है।

वीरेन्द्र के काव्य में विज्ञान और टैक्नोलॉजी के प्रभाव के साथ-साथ बौद्धिकता का नवोन्मेष भी दिखाई देता है। अपने संस्कारों के अनुसार इन्हें जहाँ कहीं से भी व्यक्ति और समाज के विकास में सहायक तत्व प्राप्त हुए हैं, उन्हें इन्होंने सहज भाव से ग्रहण कर लिया है।

उसके बाद वीरेन्द्रजी के नव्यशिल्प का परिचय दिया है। वीरेन्द्रजी की सबसे बड़ी विशेषता एवं उपलब्धि भाषा के क्षेत्र में है। वीरेन्द्र ने भाषा को रूढ़ियों से मुक्त कर सीधी, सपाट एवं नंगी भाषा को अपनाया है। वीरेन्द्र ने अकृत्रिम और रोजमर्रा की भाषा का भी प्रयोग किया है। तथा कई रचनाओं में अंग्रेजी शब्दों के भी प्रयोग सरलता से किये हैं। उनकी जनभाषा साहित्यिक भाषा बनी है। उन्होंने भाषा को सिद्धि नहीं साधन माना है।

वीरेन्द्रजी ने बिम्ब और भाषा के सफल, सहज और जीवन्त रूप को अनाया है। नयी कविता के द्वारा बिम्ब ग्रहण के माध्यम से जिन नवीन उपकरणों का चयन किया गया है उनका विवेचन इसमें है। बिम्ब योजनाओं के प्रति विशेषाग्रह तथा बिम्ब के महत्व में वीरेन्द्रजी की वैचारिक धारणाओं का उल्लेख है। वीरेन्द्रजी ने उपमानों की नवीनता के लिए जिन मौलिक बिम्ब और नवीन उपकरणों को अपनी कविता में स्थान दिया है इसका अंकन इस प्रकरण में मैंने किया है।

अभिव्यंजना की भाषा संबंधी नवीन शब्दों की तोड़-मोड़, आँचलिक, ग्रामीण, देशज शब्दों की सन्निहिनी, विदेशी तथा दूसरी भाषाओं एवं बोलियों के शब्दों को ग्रहण करने की उदारता, मुहावरें, लोकोक्तियों का प्रयोग आदि का समावेश इसमें बड़ी सफलता के साथ किया है।

अतः नई कविता में हिन्दी काव्य को जो बौद्धिक और सामाजिक चेतना वीरेन्द्रजी ने प्रदान की है और कविता को जन-समाज के निकट लाने का प्रयास किया है। वीरेन्द्रकुमार के साहित्य में एक ओर कविता का नया रूप है और दूसरी ओर प्राचीनता की दूरूहता भी पायी जाती है। उनकी विविध रूपों की पहचान हिन्दी साहित्य में अनंत काल तक याद देती रहेगी।

प रा म र्श

निष्कर्षतः यह कहना उचित है कि, प्रयोगवाद के कवि वीरेन्द्रकुमार के कविता में कविता की संपूर्णता को पहचानने की ठोस एवं कारागर पहल है। कवि ने प्रयोगवादी कविता को एक नया संदर्भ प्रदान किया है और कविता को जनमानस के निकट लाने का यथोचित प्रयोग किया है।

वीरेन्द्रकुमार जैन के काव्य में संवेदनशीलता कुट-कुट कर भरी है। रोमांटिक के माध्यम से कवि को काव्य परिचायक है। कल्पना को प्रस्तुत करते वक्त कवि ने यथार्थ स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। प्रकृति का चित्रण करते समय कवि ने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए मानव की समस्या को वाणी देने का प्रयत्न किया है। शिल्प-विधान की दृष्टि से वीरेन्द्रकुमार जैन का काव्य विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

वीरेन्द्रकुमार के काव्य का मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। उनके कविता के मूल्यबोध का विस्तृत विश्लेषण नहीं के बराबर है। इसीकारण इस लघु-शोध-प्रबन्ध में आपके उल्लेखनीय कविता संग्रहों का मूल्यांकन करने का मैंने अल्पसा प्रयास किया है।